संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक १३ ● २७ मार्च २०१८ चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

गुरूकुल पूठ का सम्मेलन सम्पन्न :-

गुरूकुल की शिक्षा से होता है संस्कारों का निर्माण

–डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

१८ मार्च, गढ़मुक्तेश्वर– गुरूकुल शिक्षा से होता है संस्कारों का निर्माण जो माता–पिता को तथा गुरूजनों को सौभाग्यशाली बनाने में योगदान करते हैं। माता–पिता के जीवन का उपहार उसकी संस्कारित सन्तान है जो आचार्यों के अन्तेवासी बनकर अपना सर्वांगीण विकास करके विद्वान् बनते हैं तथा स्नातक बनकर समाज का आभूषण बनते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्ती जी द्वारा निर्धारित शिक्षा पद्धति को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरूकुल शिक्षा पद्धति के नाम से इसका शुभारम्भ किया और १६०२ सन् आज तक यह निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है गुरूकुल पूठ इसी परम्परा का एक प्रकल्प है यहाँ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जैसे तपस्वी विद्वान् सन्यासी ने अपना जीवन लगाकर गुरूद्रोणाचार्य की संस्था को पुनर्जीवित किया है। यह संस्था आर्यवीरदल

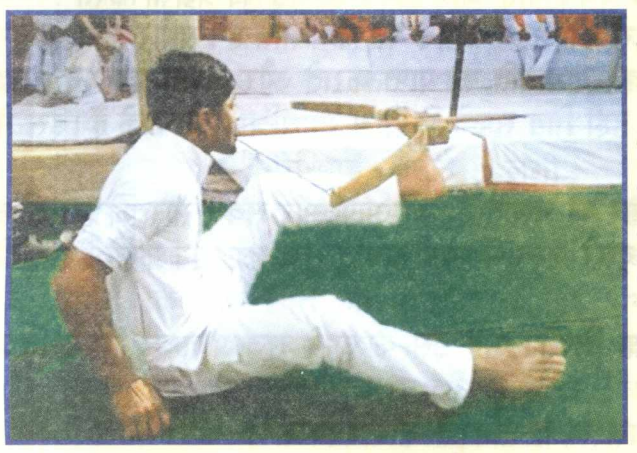

का मुख्य केन्द्र बिन्दु है स्वामी जी मेरे साथ सभा के मन्त्री पद पर भी प्रतिष्ठत हैं आर्य समाज को ऐसे विद्वान् सन्यासियों पर गर्व है।

इस गुरूकुल पूठ की उन्नति की कामना करता हुआ प्रदेश की समस्त आर्यजनता से अपील करता हूँ कि ऐतिहासिक संस्था के संरक्षण एवं संवर्द्धन में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करेगें। सभा की अध्यक्षता मेरठ वि०वि० के शिक्षाविद डा०एम० एल० यादव ने की उन्होंने प्रथम वार संस्था को देखकर भावविभोर होते हुए अपनी ओर से भूरि भूरि प्रशंसा की तथा भविष्य में भी सहयोग देने का संकल्प लिया वि० अतिथि प्रो० महावीर सिंह जी ने भी अपना आशीर्वाद दिया रात्रि में समाज सेवी ऋषिपाल भड़ाना की अध्यक्षता में युवा सम्मेलन का आयोजन हुआ मुख्य अतिथि श्री ब्रजेश आर्य संचालक आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश रहे।

विशिष्ट अतिथि राजपाल आर्य पिलखुवा, ठाकुर सिंह आर्य कपासी अमरोहा एवं महेश आर्य बहादुरगढ़ रहे आचार्य प्रमोद कुमार जी– आचार्य रामकुमार के भाषण तथा ब्र० दयानन्द आर्य, ब्र० आनन्द आर्य, ब्र० मिलन आर्य, म० जगमाल सिंह तथा म० प्रताप सिंह आर्य सहारनपुर द्वारा क्रान्तिकारियों के

शेष पृष्ठ ७ पर

आर्य समाज बुढ़ाना एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर का कार्यकर्ता सम्मेलन एवं यज्ञोत्सव

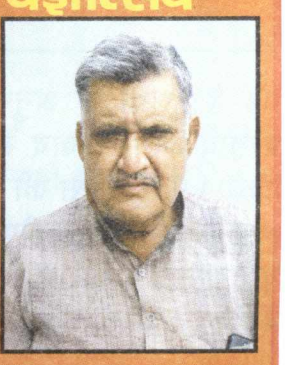

सभी बन्धुओं को जानकर परम हर्ष होगा कि आर्य समाज बुढ़ाना (मु० नगर) में वैशाख कृष्ण पक्ष द्वितीया, तृतीया चतुर्थी एवं पंचमी संवत् २०७५ दिन सोमवार, मंगलवार, बुधवार व बृहस्पतिवार दिनांक २, ३, ४, व ५ अप्रैल २०१८ को पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ में श्री योगेन्द्र जी आचार्य हौसंगाबाद के प्रवचन होगें। इस अवसर पर माननीय श्री कुलदीप आर्य बिजनौर तथा गणमान्य विद्ववान सन्यासी एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

अतः आप सभी बन्धुओं को निमन्त्रण दिया जाता है कि आप सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्म लाभ उठाये।

निवेदक

अरविन्द कुमार

मंत्री आर्य समाज बुढ़ाना
जिला आर्य उप प्रतिनिधि
सभा मुजफ्फरनगर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

दयानंद वैदिक चेयर स्टाफ को संस्कृत में विलय करने का विरोध

पूर्व स्टूडेंट्स के अलावा डी.ए.वी. लॉबी भी विरोध में

पंजाब यूनिवर्सिटी में दयानन्द वैदिक चेयर के स्टाफ को संस्कृत विभाग के स्टाफ के साथ मर्ज करने के प्रस्ताव का विरोध हो रहा है। हालिया सिंडिकेट मीटिंग में इस प्रस्ताव को होल्ड पर रखा गया है लेकिन इसके बावजूद एक बड़ी लॉबी इस प्रस्ताव का विरोध कर रही है। चेयर के पूर्व स्टूडेंट्स के अलावा डीएवी मैनेजमेंट से जुड़े लोगों ने भी इसका विरोध किया है। सिंडिकेट में मैन पावर ऑडिट कमेटी की रिपोर्ट में यह प्रस्ताव रखा गया था कि संस्कृत काफी छोटा डिपार्टमेंट है और लगभग ७ इम्प्लॉइज इसमें तैनात हैं। संस्कृत से ही जुड़ी दयानन्द वैदिक चेयर में भी स्टाफ को एडजस्ट किया जाए ताकि खर्चे कम हों। ऐसे में उन्होंने एक छोटे डिपार्टमेंट का हवाला देते हुए इसमें स्टाफ को मर्ज करने के लिए रखा था। फिलहाल संस्कृत विभाग में सिर्फ ३ टीचर हैं। यूजीसी बहुत पैसा दे रहे हैं – चेयर से पीएचडी करके जालंधर के एक कॉलेज में प्रिंसिपल लगे डॉ० उद्यन आर्य ने कहा कि इस चेयर को यूनिवर्सिटी निरर्थक मान रही है जबकि इस दयानंद स्टडीज के लिए इन दिनों यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन बहुत पैसा दे रहा है। इस साल दयानंद चेयर से ३ रिसर्च स्कॉलर को पीएचडी अवॉर्ड की गई है। सूत्रों के अनुसार चेयर का स्टाफ मर्ज करने का प्रस्ताव आने के बाद डीएवी की लॉबी ने भी इसका विरोध किया। पीयू कैंपस की सीनेट और सिंडिकेट में डीएवी लॉबी और सिंडिकेट में डीएवी लॉबी काफी मजबूत है हालांकि यूनिवर्सिटी प्रशासन ने उनको आश्वासन दिया है कि चेयर बंद करने की कोई कोशिश नहीं चल रही है।

यूनिवर्सिटी में चेयर बंद करने का कोई प्रस्ताव नहीं रखा है और ना ही आगे ऐसी कोई योजना है। यूजीसी की ओर से पीयू को इस चेयर के लिए कोई फंड नहीं मिलता पर मामला भावनाओं से जुडा है इसलिए यूनिवर्सिटी ऐसा कोई कदम नहीं उठाएगी।

– सम्पादक

प्रेरक प्रसंग–

एक बार एक केकड़ा समुद्र किनारे अपनी मस्ती में चला जा रहा था और बीच बीच में रुक रुक कर अपने पैरों के निशान देख कर खुश होता। *आगे बढ़ता पैरों के निशान देखता और खुश होता,,,,,* *इतने में एक लहर* *आयी और उसके पैरों के सब निशान मिट गये।* *इस पर केकड़े को बड़ा गुस्सा आया, उसने लहर से बोला ,**"ए लहर* *मैं तो तुझे अपना मित्र मानता* *था,** *पर ये तूने क्या किया ,**मेरे बनाये सुंदर* *पैरों के निशानों को ही मिटा दिया कैसी दोस्त हो तुम।"*

*तब लहर बोली,** *" वो देखो पीछे से मछुआरे लोग पैरों के निशान देख कर ही तो केकड़ों को पकड़ रहे हैं,,,**हे मित्र।* *तुमको वो पकड़ न लें , बस इसीलिए मैंने निशान मिटा दिए !* *ये सुनकर केकड़े की आँखों में आँसू आ गये ।*

सच यही है कई बार हम सामने वाले की बातों को समझ नहीं पाते और अपनी सोच अनुसार उसे गलत समझ लेते हैं।

जबकि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं।

*अतः मन में वैर लाने से बेहतर है कि हम सोच समझ कर

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ पञ्चम समुल्लासारम्भः

अथ वानप्रस्थसंन्यासविधिं वक्ष्यामः

नाना प्रकार के रत्य सुवर्णादि धन (विविक्त) अर्थात् संन्यासियों को देवे और वह श्लोक भी अनर्थक है। क्योंकि संन्यासी को सुवर्ण देने से यजमान नरक को जावे तो चांदी, मोती, हीरा आदि देने से स्वर्ग को जायेगा।

(प्रश्न) यह पण्डित जी इस का पाठ बोलते समय भूल गये। यह ऐसा है कि 'यतिहस्ते धनं दद्यात्' अर्थात् जो संन्यासियों के हाथ में धन देता है वह नरक में जाता है।

(उत्तर) यह भी वचन अअविद्वान् के कपोलकल्पना से रचा है। क्योंकि जो हाथ में धन देने से दाता नरक को जाय तो पग पर धरने वा गठरी बांध कर देने से स्वर्ग को जायेगा। इसलिए ऐसी कल्पना मानने योग्य नहीं। हां ! यह बात तो है कि जो संन्यासी योगक्षेम से अधिक रक्खेगा तो चोरादि से पीड़ित और मोहित भी हो जायगा परन्तु जो विद्वान् है वह युक्त व्यवहार कभी न करेगा, न मोह में फंसेगा। क्योंकि वह प्रथम गृहाश्रम में अथवा ब्रह्मचर्य में सब भोग कर वा सब देख चुका है और जो ब्रह्मचर्य से होता है वह पूर्ण वैराग्ययुक्त होने से कभी कही नहीं फंसता।

(प्रश्न) लोग कहते हैं कि श्राद्ध में संन्यासी आवे वा जिमावे तो उस के पितर भाग जायें और नरक में गिरें।

(उत्तर) प्रथम तो मरे हुए पितरों का आना और किया हुआ श्राद्ध मरे हुए पितरों को पहुंचाना ही असम्भव, वेद और युक्तिविरूद्ध होने से मिथ्या है। और अब आते ही नहीं तो भाग कौन जायेंगे? जब अपने पुण्य के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से मरण के पश्चात् जीव जन्म लेते हैं तो उन का आना कैसे हो सकता है? इसलिये यह भी बात पेटार्थी पुराणी और वैरागियों की मिथ्या कल्पनी हुई है। हां यह तो ठीक है कि जहां संन्यासी जायेंगे वहां वह मृतक श्राद्ध करना वेदादि शास्त्रों से विरूद्ध होने से पाखण्ड दूर भाग जायेगा।

(प्रश्न) जो ब्रह्मचर्य से संन्यास लेवेगा उसका निर्वाह कठिनता से होगा और काम का रोकना भी अति कठिन है। इसलिए गृहाश्रम वानप्रस्थ होकर जब वृद्ध हो जाय तभी संन्यास लेना अच्छा है।

(उत्तर) जो निर्वाह न कर सके, इन्द्रियों को न रोक सके, वह ब्रह्मचर्य से संन्यास न लेवे। परन्तु जो रोक सके वह क्यों न लेवे? जिस पुरूष ने विषय के दोष और वीर्यसंरक्षण के गुण जाने हैं वह विषयासक्त कभी नहीं होता। और उस का वीर्य विचाराग्नि का इन्धनवत् है अर्थात् उसी में व्यय हो जाता है। जैसे वैद्य और आषधों की आवश्यकता रोगी के लिए होती है वैसी नीरोगी के लिए नहीं। इसी प्रकार जिस पुरूष वा स्त्री को विद्या धर्मवृद्धि और सब संवार का उपकार करना ही प्रयोजन हो वह विवाह न करे। जैसे पंचशिखादि पुरूष और गार्गी आदि स्त्रियां हुई थीं।

इसलिये संन्यासी होना अधिकारियों को उचित है। और जो अनधिकारी संन्यास ग्रहण करेगा तो आप डूबेगा औरों को भी डुबावेगा। जैसे 'सम्राट' चक्रवर्ती राजा होता है वैसे 'संन्यासी होता है। प्रत्युक्त राजा अपने देश वा स्वसम्बन्धियों में सत्कार पाता है और संन्यासी सर्वत्र पूजित होता है।

विद्वत्त्वं चं नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन। स्वदेश पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।१।।

–यह चाणक्य-नीतिशास्त्र का श्लोक है

विद्वान और राजा की कभी तुल्यता नहीं हो सकती क्योंकि राजा अपने राज्य ही में मान और सत्कार पाता है और विद्वान् सर्वत्र मान और प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। इसलिये विद्या पढ़ने, सुशिक्षा लेने और बलवान्मान और प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। इसलिये विद्या पढ़ने, सुशिक्षा लेने और बलवान् होने आदि के लिए ब्रह्मचर्य सब प्रकार के उत्तम व्यवहार सिद्ध करने के अर्थ गृहस्थ, विचार ध्यान और विज्ञान बढ़ाने तपश्चर्या करने के लिए वानप्रस्थ, और वेदादि सत्यशास्त्रों का प्रचार, धर्म व्यवहार का ग्रहण और दुष्ट व्यवहार के त्याग, सत्योपदेश और सब को निःसन्देह करने आदि के लिए संन्यासाश्रम है। परन्तु जो इस संन्यास के मुख्य धर्म सत्योपदेशादि नहीं करते वे पतित और नरकगामी हैं इस से संन्यासियों को उचित है कि सदा सत्योपदेश शंकासमाधान, वेदादि सत्यशास्त्रों का अध्यापन और वेदोक्त धर्म की वृद्धि प्रयत्न से करके सब संसार की उन्नति किया करें।

(प्रश्न) जो संन्यासी से अन्य साधु, वैरागी, गुसाईं, खाखी आदि हैं वे श्री संन्यासाश्रम में गिन जायेंगे वा नहीं?

(उत्तर) नहीं। क्योंकि उन में संन्यास का एक भी लक्षण नहीं। वे वेदविरूद्ध मार्ग में प्रवृत्त होकर वेद से अधिक अपने सम्प्रदाय के आचार्यों के वचन माते और अपने ही मत की प्रशंसा करते मिथ्या प्रपंच में फंसकर अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को अपने-अपने मत में फंसाते हैं। सुधार कना तो दूर रहा, उस के बदले में संसार को बहका कर अधोगति को प्राप्त कराते और अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं। इसलिये इन को संन्यासाश्रम में नहीं गिन सकते किन्तु ये स्वार्थाश्रमी तो पक्के हैं। इस में कुछ संन्देह नहीं।

जो स्वयं धर्म में चलकर सब संचार को चलाते हैं, जो आप और सब संसार को इस लोक अर्थात् वर्तमान जन्म में, परलोक अर्थात् दूसरे जन्म में स्वर्ग अर्थात् सुख का भोग करते हैं। वे ही धर्मात्मा जन संन्यासी और महात्मा हैं।

यह संक्षेप में संन्याश्रम की शिक्षा लिखी। अब इस के आगे राज प्रजाधर्म विषय लिख जाएगा।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे
सुभाषाविभूषिते वानप्रस्थसंन्यासाश्रमविषये
पञ्चमः समुल्लासः सम्पूर्णः।।५।।

क्रमशः

धरोहर.... श्रद्धेय पं० रामचन्द्र जी देहलवी का पुण्य स्मरण

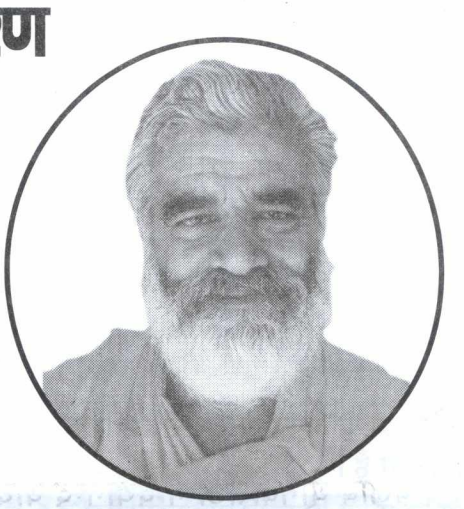

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

रामनवमी का पावन पर्व था। आर्य समाज का वार्षिक सम्मेलन चल रहा था। नगर में विशेष प्रसन्नता का वातावरण था और हम सभी गुरूकुल के छात्र स्वामी जी के साथ वार्षिक सम्मेलन देखने के लिए ततारपुर से पैदल ही आये थे। वहीं पर ठहर गये। मध्यान्ह के कार्यक्रम में अभी समय था। तभी स्वामी जी ने कहा – चलो धर्मपाल, देहलवी जी से मिलकर आते हैं। ब्रह्मचारी वेदपाल जी (वर्तमान डॉ० वेदपाल जी) बड़ौत भी साथ थे। एक ब्रह्मचारी कोई और था। हम आर्य समाज से पैदल ही उनके घर पर पहुंचे। उनसे मिलने की विशेष इच्छा थी। उनके विषय में जैसा सुना था कि वे आर्य समाज के बहुत बड़े विद्वान् हैं, शास्त्रार्थ–महारथी हैं, कुरान कण्ठस्थ है, बाइबिल पर भी अच्छी पकड़ है, अपको वेद–शास्त्रों के भी ज्ञात हैं, हैदराबाद के सत्याग्रह में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, ऐसे महापुरूष के दर्शनों का सौभाग्य मिल जाये तो बस विशेष सौभाग्य की बात होगी, इसी उत्साह से स्वामी जी दर्शन कराने ले जा रहे थे और उनकी प्रेरणास्पद कहानियां भी बताते जा रहे थे। उनके घर पर उनके भांजे विमल आर्य जी मिले। बैठाया, पानी पिलाया और तब स्वामी जी से मिलाने के लिए देहलवी जी को अन्दर से लेकर आये। उन्हें कम्पन–वायु का रोग लग चुका था, शरीर कमजोर होने लगा था, लेकिन वाणी में माधुर्य प्रसन्नता, उत्साह, आत्मीयता औरसिद्धान्तनिष्ठा तथा महर्षि के प्रति निष्ठा को देखने का सौभाग्य एक साथ ही प्राप्त हो गया। स्वामी जी से कुशल–क्षेम पूछकर और अपनी कुशलता स्वामी जी को बताकर हमारी तरफ दृष्टिपात किया और बड़े आत्मीय मिलनसार की तरह प्रसन्न होकर कुछ प्रश्न किये। उनकी वार्ता से तथा स्नेहिल व्यवहार से वह घटना हमारे जीवन की एक धरोहर बन गयी। आज जब भी देहलवी जी की कोई चर्चा करता है तो वही दृश्य साक्षात् होकर मन में आह्लाद पैदा करता है। रात्रि के कार्यक्रम की चर्चा स्वामी जी ने की और उनके प्रवचन की स्वीकृति ली तथा कुछ आर्य समाज के विषय में वार्तायें हुई। गुरूकुल ततारपुर की प्रगति एवं हमारा परिचय भी स्वामी जी ने उनसे कराया। छोटी–सी आयु में जैसा सुना और जितना याद है वही हमरे लिए उस समय पर्याप्त था। स्वामी जी ने बताया कि देहलवी जी का भी जन्म रामनवमी वाले दिन ही हुआ था और आर्य समाज प्रतिवर्ष सम्मेलन पर रामनवती के दिन उनका सम्मान करता है। इससे कार्यक्रम की शोभा में वृद्धि होती है। सम्भवताया इसीलिए मिलने गये थे। रात्रि के समय जब कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ तो उन्हें रिक्शा में बैठकार लाया गया और मंच के पास कुर्सी पर बैठा दिया। उनके आते ही लोगों में श्रद्धा और प्रसन्नता समवेत दिखाई देने लगी। भजन–संगीत के पश्चात् मंत्री महोदय ने उनका परिचय दिया और अभिनन्दन किया। मुझे स्मरण आ रहा है कि उस दिन श्री रामगोपाल जी शलवाले भी दिल्ली से पधारे हुए थे। उन्होंने भी स्वागत में माल्यार्पण किया और भाषण भी सभी वक्ताओं के इन्हीं को इंगित करके दिये जा रहे थे जैसे किसी मुख्य अतिथि के आगमन पर उनकी प्रशंसा की जाती है। आज उनकी भव्यता और भी अच्छी लग रही थी। उनकी लम्बी मूंछें महाराणा प्रताप की याद दिया रही थीं और पगड़ी से भी किसी विद्वान पं० लेखराम जी की तरह शोभायमान थे। चेहरे की भव्यता वाणी की मधुरता के साथ और अधिक बढ़ गयी थी। आपने जो भाषण दिया लोगों ने वाह–वाह करना शुरू कर दिया। मुझे तो इतना ही याद है कि उन्होंने कुरान शरीफ के आधार पर मांस खाना निषेध बताया था कि जब कुरान में भी मांस खांना मना है फिर लोग मांस क्यों खाते हैं। उनके भाषण का जनता पर प्रभाव पड़ा देख उनके विषय में जिज्ञासा और बढ़ी। फिर आपकी लिखी पुस्तकें पढ़ी। विमल आर्य जी से सम्पर्क बना जो आज तक भी बना हुआ है। वास्तव में उन जैसा विद्वान् धीर–गम्भीर, साहसी, बहादुर अब दिखाई नहीं देता। वे सदैव आर्य समाज की शान बनकर जिये और वरदान बनकर रहे। आर्य समाज हापुड़ को यह सौभाग्य मिला कि देहलवी जी ने बाद में हापुड़ को अपना स्थायी निवास बना लिया था। जो आज भी विद्यमान है। वैसे आपक जन्म मध्य प्रदेश के नीमच शहर में हुआ था लेकिन आपको प्रसिद्धि दिल्ली में रहने पर प्राप्त हुई। आपके शास्त्रार्थ आर्य समाज का इतिहास बन गये। छोटी–छोटी बातों से बड़े–बड़े शास्त्रार्थ जीत लेते थे। आपने ही एक दिन बताया कि एक मौलवी से शास्त्रार्थ हो रहा था। वह मूर्ति का विरोध कर रहा था। देहलवी जी कहने लगे कि बिना मूर्ति आपका कोई काम चलता नही है। इस पर वह उत्तेजित हो गया और इसी बात पर आर–पार की बाजी लग गयी। देहलवी जी मुस्कुराते हुए बोले कि बात पक्की करो। बात पक्की होने पर देहलवी जी बोले कि जेब से रूपया निकालो। उसने रूपया निकला कर दिया तो उन्होंने उस सिक्के पर बनी मूर्ति दिखते हुए कहा कि यह क्या है? आप तो सदैव इसे जेब में रखते हैं। मौलवी शरमा गये। लोगों ने तालियां बजाई और उन्हें विजयी घोषित किया। एक दिन चर्चा में बताया– मौलवी ने पूछा कि ऐसा काम बताओं जिसे करते–करते कभी कोई थके नहीं। मौलवी ने सोचा जो भी काम है कभी तो थकेगा ही। देहलवी जी पराजित हो जायेंगे। लेकिन आपने कहा कि जब तक व्यक्ति जीवित रहता है श्वास लेता हुआ कभी नहीं थकता। इस पर मौलवी उनके मुख देखते ही रह गये और शर्म अनुभव की। एक बार देहलवी जी एक मुस्मिल सम्मेलन में गये और मंच पर बोलने के लिए समय मांगा। मना करने पर बोले एक मिनट ही दे दीजिए तो अक्ष्यक्ष ने कहा कि एक मिनट तो दे देंगे लेकिन शर्त है कि कुरान अथवा मुसलमानों के विषय में कुछ नहीं कहोगे। अपने ही विषय में कुछ कह देना। सोचा एक मिनट में क्या बिगड़ जायेगा। श्री देहलवी जी मंच पर आये और कहा कि भाइयो, हम आर्य (हिन्दू) लोगों में एक बहुत बड़ी अच्छाई है, विशेषता है कि आपस में भाई–बहिन होकर पवित्र सम्बन्ध रखते है, विवाह करके पति–पत्नी नहीं बनते। इतना बोलते ही खलबली मच गयी और सारे सम्मेलन का स्वाद ही बिगड़ गया। इसीलिए काफिर को समय देने के लिए माना किया था, लेकिन अब तो वह दिग्विजयी देहलवी अपनी बात संक्षेप में कहकर गागर में सागर भर चुके थे। ऐसे महामनीषी विद्वान् लेखक–उपदेशक का पुण्य स्मरण करते हुए सादर नमन करते हैं।

प्रभो! आर्य समाज में फिर ऐसी शास्त्रार्थ–महारथी परम्परा में विद्वान् बनने की प्रेरणा प्रदान करें।

ओ३म् महिमा

जब से ओ३म् नाम को छोड़ा।
यह सारा जग दुःखी हो गया, पड़ा विपद् का कोड़ा।
अमृत छोड़ अनृत को ध्याया, मन विषयों में लगाया।
कभी विचार न किया तत्व का, मूर्ख फिरा भरमाया।
नाना देवी–देव के पीछे, रात और दिन दौड़ा।
जब से ओ३म् नाम को छोड़ा।।
स्वार्थ अन्ध लोगों ने, अपने–अपने घाट बनाये।।
भाग रहे सब लोग उस तरफ बड़ा जो ढोंग रचाये।
एक के पीछे ऐसे धाये, ल्यों लगाम बिन घोड़ा।
जब से ओ३म् नाम को छोड़ा।।
नाटक, नाच और नौटंकी, जिसको आते भारी।
पूजा का अरि बना हुआ है, सबसे बड़ा पूजारी।
मजमेंबाज बढ़ रहे हैं अगणित, पक रहा है फोड़ा।
जब से ओ३म् नाम को छोड़ा।।
पति की बाँह पकड़ सुख पाती है, कुलवन्ती नारी।
कभी न कुलटा ने सुख पाया, हाथ पकड़कर भारी।
छोड़ भटकना लोक बना ले, समय रह गया थोड़ा।
जब से ओ३म् नाम को छोड़ा।।
घर के भीतर आग लगी है, बाहर अग्नि बुझाये।
आत्मज्ञान बिन जिसे देखिये, अपनी जेब कटाये।
जो एकान्त में ही मिलता है, उससे नेह न जोड़ा।
जब से ओ३म् नाम को छोड़ा।।
छोड़ अमोलक रत्न क्यों, कंकड़ पत्थर में सर पटके।
अब भी संभल न पया ''निर्मल'' खूब लग चुके झटके।
हाथ नहीं लगने वाला कुछ, अगर न जीवन मोड़ा।
जब से ओ३म् नाम को छोड़ा।।

जोगेश्वर प्रसाद ''निर्मल''
पहाड़गंज, अजमेर (राज)

विज्ञान की दृष्टि में जीवात्मा

– महेन्द्र आर्य

अगर एक वैज्ञानिक से पूछा जाए कि प्राण क्या है? तो उसके पास कोई बहुत स्पष्ट उत्तर नहीं होगा। लम्बी चौड़ी व्याख्या तो वो करने लगेगा, लेकिन एक परिभाषा उसके पास नहीं मिलेगी। अगर ये पूछा जाए कि जीवित होने के क्या लक्षण हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जैविक विज्ञान–विद् ये लक्षण बताएंगें–

१. जीवित प्राणी किसी न किसी रूप में ऊर्जा को अपने अन्दर लेता है।

२. जीवित प्राणी अपने अन्दर से अपशिष्ट वस्तुओं का त्याग करता है।

३. जीवित प्राणी निरन्तर परिवर्तनशील है।

४. जीवित प्राणी वातावरण से प्रभावित होता है।

५. जीवित प्राणी की संरचना में लम्बे अन्तराल में मौलिक परिवर्तन भी आते हैं।

एक विज्ञान–विद्वान से पूछा जाए कि पृथिवी पर जीवन का प्रारम्भ कैसे हुआ? इस प्रश्न का भी कोई उत्तर मिलने की सम्भावना नहीं है। हाँ, इस पर वो प्रचलित मान्यताओं में तीन का उल्लेख करेगा–

१. पृथिवी पर विभिन्न धर्मावम्बियों ने इस विषय पर अपनी–अपनी अवधारणाएं बना रखी हैं– सबकी सोच अलग–अलग होते हुए भी एक बात सबकी मिलती है। वो यह कि कोई बात बड़ी शक्ति है जिसने पृथिवी पर जीवन का प्रारम्भ किया। ये अवधाराणाएं पीढ़ी दर पीढ़ी पोषित हो रही हैं। हलांकि इन अवधारणाओं को सही मानने के लिए कोई प्रमाण नहीं है। इसलिए विज्ञान की नजर में ये अवधारणायें विज्ञान की सीमा और सम्भावना के बाहर का विषय हैं।

२. दूसरी प्रचलित मान्यता के अनुसार जीवन ब्रह्माण्ड के किसी दूसरे भाग से संयोग–मात्र से पृथिवी पर आया है। कई वैज्ञानिकों का विश्वास है कि किसी पुच्छल तारे या धूमकेतु या उल्का के पृथिवी से टकरा जाने के कारण पृथिवी पर जव का प्रवेश हुआ है। उनके चिन्तन के अनुसार जब ये खण्ड अपनी जगह से टूट कर सौर–मण्डल में प्रवेश कर रहे थे, तब सूर्य के मण्डल में इनका कुछ भाग अपने आप में जैविक–परमाणुओं को लेकर पृथिवी पर आ मिला। अपनी बात के पक्ष में उनका कहना है कि प्रत्येक वर्ष पृथिवी के किसी न किसी भाग में अन्तरिक्ष से उल्का–पिण्डों की वर्षा होती है। ऐसे पुच्छल तारे दूसरे ग्रहों पर भी पहुंचते हैं। ऐसे उदाहरण हैं वैज्ञानिकों के पास।

३. तीसरी और सबसे प्रचलित मान्यता, जो सबसे अधिक प्रचलित अवधारणा है, विश्व वे वैज्ञानिकों के बीच। करीब १६५० में दो वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया। उस प्रयोग में उन्होंने पृथिवी के प्राचीन वाह्य–मण्डल को प्रयोगशाला के अन्दर निर्मित कर के उस मण्डल में कुछ रासायनिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया। उनका कहना था कि उन प्रयोगों में जीवणुओं के अंश (अमीनो एसिड) ऐसी अवस्था में पैदा होते हैं। उनका ये भी मानना है कि कालांतर में ये अंश एक दूसरे से जुड़ गए और जिससे हुआ प्रारम्भिक जीव का निर्माण।

विज्ञान हो या दर्शन, जीवात्मा सबके लिए एक पहेली की तरह है। अंतर ये है कि विज्ञान अपने प्रयत्नों से जीवात्मा के आने और जाने के कारण तथा जीवन की संरचना को ढूंढ रहा है और दर्शन ने इसे ईश्वरीय व्यवस्थामान कर जीवन को जीने के निर्देश तैयार कर लिए हैं। दोनों का साथ–साथ चलना ही मानवता के लिए हितकारी है।

विज्ञान ने ये भी जानने का प्रयास किया है कि दूसरे ग्रहों पर जीवन है या नहीं , आइये जानते हैं विज्ञान के इस अनुसंधान से जुड़ी कुछ बातों को–

१. बृहस्पति– ग्रह का बाह्य वातावरण बहुत ही शक्तिशाली गुरूत्व का है वहां तेज हवाएं २२५ मील से लेकर १००० मील प्रति घंटे की रफ्तार से चलती है। तापमान बहुत ठंडा (–२७० से ३२ डिग्री F के बीच) रहता है। ये हवाएं और तापमान काफी हद तक जीवन की सम्भावना को नकारते हैं। सुनने में लगता है कि ३२ डिग्री F तापमान तो जीवन के लिए अनुकूल है। लेकिन जहाँ तापमान ३२ डिग्री है, वहां का दबाव उतना है जितना समुद्र के नीचे २ किलोमीटर उतरने के बाद होता है। संभवतः ये स्थान भी किसी तरल के अन्दर ही होगा, वरना– वायु हर जगह बर्फीली ही है। वायुमण्डल में तीन प्रकार की गैसों के बादल पाए गए हैं–अमोनिया, मिश्रित सल्फर और जल। जल संभवतः बहुत ही मोटी–मोटी बूंदों के रूप में वायुमण्डल में स्थित है। वातावरण में ऊर्जा के भी स्रोत हैं। मुख्यतः बिजली, अल्ट्रा वायोलेट किरणें, और विद्युत से चार्ज कण। बृहस्पति ग्रह के अन्दर तक जाने से तापमान १००० F डिग्री से ऊपर और दबाव पृथिवी के समुद्र की सतह का ३० लाख गुना अधिक पाया जाएगा। इन सारे तथ्यों के आधार पर अनुमान है कि कम से कम उस प्रकार का जीवन वहां संभव नहीं, जैसा कि हम पृथिवी पर पाते हैं।

२. मंगल : मंगल ग्रह का सतही दबाव करीब–करीब उतना है जितना दबाव पृथिवी की सतह से ३५ किलोमीटर ऊपर जाकर होगा। पृथिवी के ६ किलोमीटर के अर्धव्यास वाले वायुमण्डल की तुलना के मंगल का वायुमण्डल में मुख्यतः १५ प्रतिशत कार्बनडाई–ऑक्साइड, ३ प्रतिशत नाईट्रोजन और १.६ प्रतिशत आर्गन गैसें हैं। बचे हुए ०.६ प्रतिशत में ऑक्सीजन और जल–वाष्प में निशान हैं। वायुमण्डल धूल से भरा है। मंगल का तापमान १२५ F से २३ F के बीच रहता है। मंगल की दूरी सूर्य से पृथिवी की दूरी का डेढ़ गुना है। इसलिए उसे पृथिवी की तुलना में मात्र ४३ प्रतिशत प्रकाश ही सूर्य से मिल पाता है। पूरे सौर–मण्डल में मंगल ही एक ग्रह है जहां पर सबसे शक्तिशाली धूल के बवंडर आते हैं। अपने सर्वाधिक रूप में ये बवंडर पूरे ग्रह को एक साथ लपेट लेते हैं।

जुलाई १९६६ में अमरीका के जोहन्स स्पेस सेंटर के डॉक्टर द्रविड़ मके और उनकी टीम ने एक सनसनीखेज घोषणा से विश्व को चौंका दिया। उनका दावा था कि उन्हें मंगल से टूट कर पृथिवी पर गिरे एक खण्ड में जीवन संकेतक बैक्टीरिया होने के प्रमाण मिले हैं, ये खण्ड अन्टार्क्टिका ध्रुव स्थित अल्लेंहिल नामक जगह पर १९८४ में प्राप्त किये गए थे। अनुमान था कि ये खण्ड करीब १२००० वर्षों पूर्व वहां गिरा था। इस अनुसंधान ने पूरे विश्व में मंगल में जीवन होने के प्रति काफी आशाएं जगा दी।

लेकिन धीरे–धीरे वैज्ञानिकों में इस खोज के प्रति संदेह आते गए और यह निष्कर्ष नकार दिया गया। इसका आधार ये था कि बहुत सारे रसायन और आणविक संरचनाएं जो इस खण्ड पर पाई गयीं, उसका होना जीवन के होने न होने से सम्बन्धित नहीं था और जो बैक्टीरिया के नन्हें आकार थे, वो पृथिवी पर पाए जीवन से १००० गुना सूक्ष्म थे, इसलिए उन्हें जीवन में मिलाना उचित नहीं था। कुछ कार्बन आधारित रसायन जो पाए गए थे, उनके बारे में एकसा तर्क था कि उस खण्ड में पृथिवी पर गिरने के बाद समा गए थे, क्योंकि उन १२००० वर्षों के दौरान ऐसे मौके आये थे, जब वो खण्ड जल में भी डूब गया था। वैज्ञानिकों का ये मानना है कि मंगल कि परिस्थतियां पहले से अब काफी बदली हैं। इसलिए अगर उस आपतित खण्ड से जीवन के होने के प्रमाण नहीं मिलते, तो जीवन के न होने के भी बहुत बड़े कारण नहीं हैं।

३. शनिः बृहस्पति के समान शनि का वायुमण्डल भी बहुत प्रतिकूल है। शक्तिशाली गुरूत्व शक्ति, काफी अधिक दबाव, २२५ से १००० मील प्रति घंटे के बीच चलने वाली तेज हवाएं और २७० डिग्री से ८० डिग्री के बीच रहने वाला तापमान ऐसे में जीवन की कल्पना बहुत मुश्किल है। ८० डिग्री तापमान वाले क्षेत्र में दबाव उतना ही है जितना समुद्र की सतह से २ मील नीचे जाने पर मिलेगा। शनि ग्रह का बाह्य वातावरण बना है–१६.३ प्रतिशत मोलिकुलर हाइड्रोजन और ३.२५ प्रतिशत हीलिअम गैसों से। इसके अलावा वायुमण्डल में अमोनिया, एसितिलिन, इथेन, फोस्फाइन और मीथेन गैसों की उपस्थिति है। शनि के ऊपरी बादलों की तह में अमोनिया सल्फाइड या जल–कण पाए जाते हैं।

बृहस्पति के समान वातावरण में ऊर्जा के भी स्रोत हैं। मुख्यतः बिजली, अल्ट्रा वायोलेट किरणें और विद्युत से चार्ज कण। शनि ग्रह के अन्दर तक जाने से तापमान १०००० डिग्री से ऊपर और दबाव पृथिवी के समुद्र की सतह का ३० लाख गुना अधिक पाया जाएगा। कुल मिला के निष्कर्ष भी वही कि शनि ग्रह पर भी जीवन कम से कम उस रूप में पाए जाने की सम्भावना नहीं, जो हम पृथिवी पर देखते हैं।

४. टाईटनः टाईटन शनि ग्रह का एक उपग्रह है, वैसे ही जैसे पृथिवी के लिए चांद। वैज्ञानिक मानते हैं कि इस उपग्रह में पृथिवी के वायुमण्डल से बहुत समानताएं हैः लेकिन एक बड़ी विषमता है कि टाईटन का तापमान बहुत ज्यादा ठंडा है, करीब ३३० डिग्री के बीच। इतने ठण्डे वातावरण में जल का वाष्प रूपमें वायुमण्डल में पाया जाना असंभव है। टाईटन के वायुमण्ड में एक प्रकार का धुआं सा है, जो सूर्य की किरणों को वापस शून्य में परावर्तित कर देता है। परिणामस्वरूप यहां सूर्य की किरणों का पृथिवी की वनस्पति की अपेक्षा सिर्फ १ प्रतिशत अंश ही पहुंचता है, यही कारण है यहां की भीषण ठंडक का।

पृथिवी की तरह वहां के वायुमण्डल में प्रचुर मात्रा में नाइट्रोजन गैस है। इसके अलावा कई किस्म के जटिल अणु भी हैं। मीथेन गैस का तो एक महासागर होने की सम्भावना है, जो हो सकता है किसी न किसी तरल का भण्डार हो। ठण्डे तापमान के अलावा बाकी सारी बातें जीवन के होने के लिए अनुकूल हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथिवी पर भी ऐसे प्राणी पाए जाते हैं जो अति–शीत में भी जीवित रहते हैं, तो संभव है कि वहां के तापमान में भी जीवित रह सकने वाले प्राणी होंगे। वहां के वातावरण में मीथेन और ईथेन गैसों के बादल हैं, पृथिवी की सतह की तरह रेतीले पहाड़, नदियां झीलें और समुद्र (सम्भवतः मीथेन और ईथेन तरल अवस्था में) आदि का होना भी संभावित है। मौसम बदलने के भी संकेत हैं। वैज्ञानिक आईटन को पृथिवी का प्रारम्भिक रूप मानते हैं। इस उपग्रह को ब्रह्माण्ड में जीवन के कण देने का उद्गम भी मानते हैं। कुल मिलाकर टाईटन उपग्रह पर जीवन होने की बहुत अधिक सम्भावना हैः ऐसा जीवन जो जल की जगह मीथेन के समुद्र में भी सुरक्षित हो?

जीवन की ये गुत्थियाँ कभी सुलझ पाएंगी या नहीं? वैज्ञानिक अपने प्रयोगों में लगे रहेंगे, क्या जीव का निर्माण प्रयोगशाला में हो पायेगा? क्या ऐसा कोई सफलता मानव के कल्याण के लिए उचित होगी? बहरहाल जीवन और सृष्टि यूँ ही चलती रहेगी। विश्व को सुचारू रूप से चलाने के लिए वैदिक कर्मफल, सिद्वान्त, जीवात्मा की अक्षुणता, पुनर्जन्म का सिद्धान्त और मोक्ष की प्राप्ति का लक्ष्य–ये विश्वास ही मान्य मानव समाज की निर्धारित मर्यादाओं का पालन इन्हीं विश्वासों के सहारे संभव है।

''ठूँठ के ठाट और बन्दर–बाँट''

– देव नारायण भारद्वाज

एक ग्राम था, जिसके उत्तर में रामगंगा नदी बहती थी, ग्रीष्म ऋतु में उसकी धार क्षीण हो जाती थी, सभी लोग उसे पैदल पार कर लेते थे, अन्य ऋतुओं में उसे नौका द्वारा पार किया जाता था। वर्षा ऋतु में उसका रूप बड़ा भयंकर हो जाता था, लगता था मानों वह समुद्र किनारा दिखाई ही नहीं देता था। किनारे की भूमि कटती रहती थी, और गिरती हुई किनारों की मिट्टी की धड़ाम–धड़ाम की ध्वनियां इतनी भयंकर हो जाती थीं, कि सुनकर रात्रि में सोते हुए लोग भी डर जाते थे। वर्षानुवर्ष इस कटान के कारण कई ग्राम लुप्त हो जाते थे, जिसके निवासी पीछे हटकर अपनी नई बस्ती बसा लेते थे। इतने पर भी एक ग्राम ऐसा था, जिस पर बाढ़ का प्रकोप, बस इतना ही होता था, कि ग्राम में पानी घुसता था, कुछ दिन टिकता था, फिर वापस हो जाता था।

ग्राम के उत्तर में जो बाग था, वह कटकर एक बड़ बंजर भूमि के मैदान में बदल गया था। एक वृक्ष का ठूँठ वहां पर खड़ा–खड़ा–अपने बाग की बुलन्दी की याद दिलाता रहता था। बच्चे जो यहां खेलने आते थे, वे उस पर चढ़ते, उतरते, दौड़ते हुए खेल खेलते रहते थे। एक दिन वहां पर बूढ़ी गाय आयी, और ठूँठ से रगड़ कर अपने शरीर की खुजली मिटाने लगी। वृक्ष के इस ढूँठ से निकली लकड़ी की नोक ने गाय की मृत्यु हो गयी। बूढी गाय को तो मरना ही था, किन्तु उसके मरने का बहाना, वृक्ष का वह ठूँठ बन गया। ग्राम के क्षत्रिय जमीदार समझदार जागरूक थे। वे संस्कार–जागरण के लिए ब्राह्मणों के योग्य पुत्रों को काशी भेजकर संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था करते थे। जब–जब ये बालक ग्राम में अवकाश पर लौटते थे, जब जमीदार लोग उनकी वार्ता सुनकर आनन्दित होते थे। मैदान में खड़े उस ढूँठ को देखकर दार्शनिक ग्रन्थ कादंबरी के रचयिता महाकवि वाणभट्ट के पुत्रों के वाक्य अवश्य दोहराते थे, जो किसी सूखे वृक्ष ठूँठ से ही जुड़े होते थे। एक का अनुवाद था– 'शुब्कोवृक्षः तिष्ठति अग्रे' तो दूसरे ने किया 'नीरस तरूरिह विलसति पुरतः'। दूसरे के अनुवाद को श्रेष्ठ मानकर पिता वाणभट्ट ने अपने अधूरे काव्य को पूर्ण करने का अधिकार प्रदान कर दिया था। दोनों ब्राह्मण किशोर अन्य श्लोक सुनाकर भी ग्राम वासियों को सुख पहुंचाते रहते थे। यहां पर चूंकि वृक्ष के ठूँठ का प्रसंग है, अस्तु यहीं तक सीमित रक्खा गया है।

ग्राम के बाल, युवा वृद्ध जनों को उस दिन बड़ा आश्चर्य हुआ, कि बाप, दादों की पीढ़ियों से खड़ा वह ठूँठ हरा होने लगा, और कुछ ही महीनों में वह हरा–भरा वृक्ष बन गया। वर्ष व्यतीत होते–होते ऊँचा उठकर वह वृक्ष आसमान से बातें करने लगा। ग्रामवासी इस वृक्ष से छाया के साथ फलों की आश लगाये रहते थे। उनकी यह आशा एक प्रभात मैं निराशा मैं बदल गयी थी, जब उन्होंने देखा कि रात्रि में आयी आँधी से वह वृक्ष के धराशायी होने पर शायद ही किसी को दुःख हुआ हो,, क्योंकि उस वृक्ष के तना, टहनी, पत्ते सभी उनके काम में आय गये, और वहां बच रहा केवल एक गहरा गढ्ढा जिसकी मिट्टी भी खोद, खोद कर ग्रामवासी अपने काम में लाने लगे थे। काशी से अपनी शिक्षा पूर्ण कर ग्राम के ब्राह्मण बालक अब युवा पण्डित बनकर घर लौट आये और पूजा, पाठ कथा, वार्ता, के द्वारा परिवारों में संस्कार जागरण का कार्य करने लगे। उन्होंने ठूँठ से बने वृक्ष के आँधी से विनष्ट होने के कारण बने गढ्ढे को देखकर एक वेद मन्त्र सुनायाः

असद् भूम्याः समभवत् तद्यामेति महद् व्यचः।
तद् वै ततो विधूपायत् प्रत्यक कर्त्तारभृच्छतु।।
(अथर्व ४.१६.६)

अन्याय असद् सब पाप कृत्य, उठता है भूमि तला तल से।
वह लौट भूमि पर फिर आता, कर्ता को विनष्ट कर जाता,
यहाँ न कोई बच सकता है, कृत कर्म न्यायफल चंगुल से।।

उन्होंने समझाया कि फलता–फूलता राष्ट्र राजा–प्राजा के पारस्परिक अन्याय, अत्याचार, दुराचार, दुष्कर्म के प्राबल्य से सूखकर ठूँठ मात्र रह जाता है, और जहां गौमाता की रक्षा न होकर उसका रूधिर बहता है, तो उसकी संस्कृति जड़–मूल से नष्ट होकर कवि की इन पंक्तियों को चरितार्थ करने लगती है–

अन्धकार है वहीं जहां आदित्य नहीं है।
मृवत है वह देश जहां साहित्य नहीं है।।
जो भरा नहीं है, भावों से बहती जिसमें इस धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यारा नहीं।।

उस ठूँठ को गोहत्या का ऐसा अभिशाप लगा, कि पहले तो फूलता– फलता ठाठें मारता दिखाई दिया, किन्तु बाद में अस्तित्व हीन हो गया।

उपस्थित ग्रामवासियों ने उन शास्त्रज्ञ युवकों से इस परिस्थिति को दूर करने का उपाय जानना चाहा, तो उन्हें महाभारत ग्रन्थ के अनुशासन पर्व से एक कहानी सुनाकर सन्तुष्ट कर दिया। एक था तोता, जो वियाषान जंगल के एक वृक्ष की खोह में रहता था। उसके हरे पंख, लाल चोंच, गर्दन में सुनहरी कंठी और लालिमा लिए पंजे मनोहारी लगते थे। इस पेड़ पर और भी अनेक प्रजातियों के पक्षी रहते थे। प्रभात होते ही सभी पक्षी चहचहाकर अपना कलरव गान सुनाते हुए दूर दिशाओं में उड़ जाते, और दान–पानी का प्रबन्ध करते। लौटकर इसी पेड़पर आकर बसेरा करते। पेड़ इतना विशाल था कि यात्री ग्वाले, हिरण आदि इसके नीचे बैठकर विश्राम करते।

एक शिकारी हिरण के शिकार की नियत से इधर आ निकला।

उसने हिरण को मारने के लिए विष बुझा तीर छोड़ा, हिरण भाग गया, किन्तु पेड़ पर जाकर लग गया। शिकारी तो निराश होकर लौट गया, किन्तु पेड़ विष के मारक प्रभाव से सूखने लगा। कुछ ही दिनों में पेड़ सूखकर ठंकर बन गया। सब पक्षी किनारा कर गये। पर तोता कहीं नहीं गया। उसी खोह में बैठा रहा। पेड़ की दुदर्शा देखकर तोते की आखों में आंसू आ जाते। तोता इतना खिन्न रहने लगा कि वह अपना चुग्गा लेने के लिए भी कहीं बाहर नहीं जाता।

होना क्या था पेड़ की भांति तोता भी सूखता चला गया। उसका भांसल सुन्दर शरीर हड्डियों का ढांचा बनकर रह गया। किसी को क्या पड़ी थी, कि यहां आकर उसकी दयनीय दशा को देखे। पर उसकी त्याग–तपस्या की सुधि देवराज इन्द्र को लग गयी। उन्हें आभास हुआ कि दृढ़व्रती तोता अपने जन्मवृक्ष का इतना भक्त है कि वहां अपने प्राणों की आहुति देने के उद्यत है। इन्द्र विचलित हो गये। देवता न तो आखों के मोहताज होते हैं न कानों के, वे तो भावना की सुगन्धि दूर से ही ले लेते हैं। इन्द्र से रहा नहीं गया। वे ब्राह्मण का रूप धारण कर तोते के पास आ गये। तपस्या के कारण के उसकी चेतना तीव्र एवं मनवीय बन गयी थी। उसने देवराज को पहचान लिया। उन्हें प्रणाम किया और अपनी दुर्बल किन्तु नम्रवाणी से उनका स्वागत किया।

इन्द्र ने तोता को बहुत समझाया कि वह एक सूखे पेड़ के लिए अपने प्राण न गवाएं। पर तोता अपने संकल्प से टस से मस न हुआ। उसने इन्द्र से कहा। यह पेड़ मेरा जन्मतरू ही नहीं, सब कुछ है। मैं इसी पर जन्मा, पला, बड़ा हुआ और आज तक की अवस्था तक पहुंचा हूँ। इसके हरे–हरे पत्तों की सुखद छाया में मैंने अपनी थकान मिटायी व विश्राम पाया। इसके फूलों की सुगन्ध से मेरी आत्मा तृप्त हुई है। इसके फल खाकर मेरा शरीर पोषित हुआ है। माँ–बाप ने तो मुझे जन्म ही दिया था। पाला–पोसा तो इसी ने। इसके उपकारों को भला मैं कैसे भूल सकता हूं। आप राजाज्ञा के राजा होकर कैसे यह अनीति की बात कहते हैं। मुझे इसी के साथ मर जाने दो, दवेराज। इन्द्र तोते की दृढ़भक्ति एवं अडिग संकल्प को देखकर चकित रह गये और बोले–पक्षिवर मैं तुम्हारी जन्म तक के प्रति इस आचल भक्ति से बहुत पसन्न हूँ। वर मांग लो जो मांगगें दूंगा। ऐसा जन्म स्थल प्रेम यदि सबके मन में आ जाये, तो जीवन की कोई समस्या व भेदभाव ही न रहे। मांगो, क्या मागते हो। तोता बोला–देवराज! यदि देना चाहते हो तो यह वरदान दो– मेरा जन्मतरू फिर हरा भरा हो जाये। पूर्ववत हरे–हरे पत्ते, पीले, पीले फूल और रस भरे फल फिर से आ जायें। इन्द्र को तथास्तु कहना पड़ा। पेड़ फिर पहले जैसा हो गया। पक्षियों के मेले लगने लगने। हिरणों के झुण्ड सजने लगे, और ग्वाल–बालों को क्रीड़ा स्थल फिर से हंसने लगा। यहीं नहीं, तोता भी फिर पहले जैसा हृष्ट–पुष्ट मांसल और प्रसन्न मन हो गया। राष्ट्र पुजा का वंशवृक्ष होता है।

ग्राम के उन वेद विद्वान युवकों ने ग्रामवासियों को प्रथम कथानक में युगों–युगों से खड़े ठूँठ का गोवध के शाप से पहले बढ़ने फिर समूल नष्ट–भ्रष्ट होने की बात बताई। दूसरे कथानक में आतंकी शिकारियों द्वारा विखण्डित कर दिए गये राष्ट्र को त्याग तपस्वी मातृभक्त नागरिकों के बलिदान से पुनप्रतिष्ठित कर दिये जाने का सन्देश है। इन्द्र राष्ट्र नायक के रूप में अपने नागरिकों का आदर्श प्रेरणा स्रोत होता है। ईश्वर भी 'इन्द्रस्यः युज्यः सखा' (ऋ० १.२२.१६) अनेक ऐश्वर्य युक्त होने योग्य प्रजा का समर्थ सखा बन जाता है। ऐसी उज्जवल, स्थिति होने पर वाममार्गी व विरोधी शान्त रहते हैं, अन्यथा वहां हर विभाग व उपक्रम में बन्दर–बाँट प्रारम्भ हो जाता है। यह कथा तो बच्चे भी जानते हैं। एक रोटी के लिए दो बिल्लयां लड़ पड़ी। बन्दर महोदय ने देखा तो बटवारा करने आ गये। रोटी के दो टुकड़े किये और तराजू के दोनों पलड़ों में रख दिये। ऊँचे–नीचे पलड़ों का सन्तुलन बनाने के बहाने शनैः–शनैः पूरी रोटी स्वयं खा गया। त्यागी, तपस्वी शासक वर्ग ऐसे बन्दरों को पकड़ते है वे कारागार जाते–जाते बन्दर धुड़की लगाने में चूकते नहीं। पर तोते पेड़ पर फुदकते और माफिया जेल के पिंजरों में तड़पते रह जाते हैं।

''मैं ईश्वर को जानता हूँ''

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ईश्वर है अथवा नहीं? ईश्वर की सत्ता अवश्य है। क्या आप उसे जानते हैं? हां, मैं ईश्वर को जानता हूं, ईश्वर कैसा है? ईश्वर संसार में सबसे महान है। वह अन्धकार से पूरी तरह मुक्त है अर्थात् वह अन्धकार से सर्वथा दूर है। वह आदित्य वर्ण अर्थात् सूर्य के समान प्रकाशमान ज्योतिस्वरूप, ज्ञानस्वरूप व आनन्स्वरूप आदि असंख्य गुणों वाला है। मनुष्य तक तक मृत्यु से पार नहीं जा सकता जब तक की वह ईश्वर को जान न ले और प्राप्त न कर ले। मृत्यु से पार जाने का अर्थ है कि मृत्यु पर विजय प्राप्त करना। मृत्यु से घबराये न और मुस्कराकर उसका स्वागत करे। ऐसा कब होता है जब कि मनुष्य ईश्वर, आत्मा और जन्म व मृत्यु के चक्र के यथार्थ रहस्य को जान लेता है। इन्हें जान लेने पर मनुष्य मृत्यु के पार चला जाता है। मृत्यु के पार क्या है? इसका उत्तर है कि मृत्यु के पार मोक्ष है। यह मोक्ष ऐसा है कि इसमें दुःख का लेश मात्र भी नहीं है। मोक्षावस्था में मनुष्य का आत्मा ईश्वर के सानिध्य में रहकर आनन्द का भोग करता है। उसकी सभी इच्छायें व अभिलाषायें पूर्ण हो जाती हैं। वह जन्म व मरण के दुःखरूपी चक्र से मुक्त हो जाता है। मोक्ष की अवधि ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष होती है। इसके बाद मुनष्य पुनः मनुष्य योनि में जन्म लेता है और वेदाध्ययन सहित श्रेष्ठ कर्मों को करके पुनः जीवनोन्नति कर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है व करता है।

हमने जो उपर्युक्त विचार लिखे हैं वह हमारे नहीं अपितु ईश्वर द्वारा यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के मन्त्र संख्या १८ में मनुष्यों को उपदेश करते हुए बताये गये हैं। वेद स्वतः प्रमाण होने सेयह वेद वचन भी पूर्ण प्रामाणिक एवं मान्य है। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वज्ञ होने से निर्भ्रान्त है। वेद के सभी वचन इसी कारण प्रमाण माने जाते हैं कि वह सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ ईश्वर के कहे गये वचन हैं। तर्क व युक्ति से भी वेद में कही गई बातों की पुष्टि की जा सकती है। आईये, अब वेदमन्त्र पर भी एक दृष्टि डाल लेते हैं। वेदमन्त्र है:

वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय।।

इस मंत्र का ऋषि दयानन्द जी द्वारा किया गया पदार्थ एवं भावार्थ हम प्रस्तुत करते हैं। पदार्थ में वह लिखते हैं, ''हे जिज्ञासु पुरूष! (अहम्) मैं जिस (एतम्) इस (महान्तम्) बड़े–बड़े गुणों से युक्त (आदित्यवर्णम्) सूर्य के तुल्य प्रकाशस्वरूप (तमसः) अन्धकार वा अज्ञान से (परस्तात्) पृथक् वर्तमान (पुरूषम्) स्वस्वरूप से सर्वत्र पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हूँ (तम्, एव) उसी को (विदित्वा) जान के आप (मृत्युम्) दुःखदायी मरण को (अति, एति) उल्लंघन कर जाते हैं किन्तु (अन्यः) इससे भिन्न (पन्थाः) मार्ग (अयनाय) अभीष्ट स्थान मोक्ष के लिए (न, विद्यते) नहीं विद्यमान है।

उपर्युक्त मंत्र का कृत भावार्थ है 'यदि मनुष्य इस लोक परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सब से अति बड़े स्वयंप्रकाश और आनन्दस्वरूप अज्ञान के लेश से पृथक् वर्तमान परमात्मा को जान के ही मरणादि अथाह दुःखसागर से पृथक हो सकते हैं। यही सुखदायी मार्ग है। इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों की मुक्ति का मार्ग नहीं है।'

उपर्युक्त मन्त्र के बाद के मंत्र में भी ईश्वर कैसा है, इसका उपदेश ईश्वर ने किया है। मन्त्र में बताया गया है कि 'जा यह सर्वरक्षक ईश्वर आप उत्पन्न न होता हुआ (अर्थात् जन्म न लेता हुआ) अपने सामर्थ्य से जगत् को उत्पन्न कर और उसमें प्रविष्ट होके सर्वत्र विचरता है, जिस अनेक प्रकार से प्रसिद्ध ईश्वर को विद्वान लोग ही जानते हैं, उस जगत् के आधार रूप सर्वव्यापक परमात्मा को जान कर मनुष्यों को आनन्द को भागना चाहिये।'

वेद के इन मंत्रों में ईश्वर के स्वरूप सहित ईश्वर को जानने से होने वाले लाभों को भी बताया गया है। ईश्वर को जानने से मनुष्य मृत्यु के पार होकर मोक्ष अर्तात् अक्षय आनन्द को प्राप्त करता है। यह मोक्ष का आनन्द जीवात्माओं वा मनुष्यों को बिना ईश्वर को जाने, बिना ईश्वर की उपासना किये व साथ ही वेदोक्त कर्म किये बिना प्राप्त नहीं होता। हम यह भी अनुमान करते हैं कि जो लोग वेदों का अध्ययन नहीं करते, वेदानुसार ईश्वरोपासना, देवयज्ञ व इतर महायज्ञों को नहीं करते और जिनके गुण, कर्म व स्वभाव वेदाज्ञा के अनुरूप न होकर विपरीत हैं, वह न तो ईश्वर को यथार्थरूप में जान सकते हैं और न ही मोक्षानन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

मनुष्य जीवन पर विचार करते है। तो हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य शरीर में परमात्मा ने हमें पांच ज्ञान व पांच कर्मेन्द्रियां दी हैं। ज्ञानेन्द्रियों से ईश्वर व सांसारक ज्ञान प्राप्त कर कर्मेन्द्रियों के द्वारा हमें वेद विहित कर्मों को करना है। इससे हम ईश्वर सहित आत्मा और संसार का ज्ञान भी प्राप्त कर लेंगे और मृत्यु के पार भी जा सकते हैं तथा आनन्द का भोग भी दीर्घ काल तक कर सकते हैं। मनुष्य जीवन हमें मिला ही इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए है। ईश्वर व जीवात्मा दोनों चेतन पदार्थ हैं। ईश्वर आनन्दस्वरूप है और जीवात्मा आनन्द से रहित है। मनुष्य को जीवात्मा अविद्या व अज्ञान की अवस्था में भौतिक पदार्थों में सुख व आनन्द की खोज करते हुए उनके भोग को ही जीवन का लक्ष्य समझ लेता है। वेद पढ़ने पर ज्ञात होता है कि ईश्वरोपासना एवं वैदिक कर्मों को करने से ही अक्षय सुख मिलता है। अतः सभी मनुष्यों को वेद की शरण को प्राप्त होकर ईश्वर को जानना चाहिए, और जन्म व मरण के दुःखरूपी चक्र से छूटकर मोक्षानन्द का भोग करना चाहिए। इति ओ३म् शम्।

शिव मन जीवन शिव कर दे

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
कुलाधिपति
गुरूकुल प्रभात आश्रम
टीकरी, भोला–झाल मेरठ

शिव मम जीवन शिव कर दे।।
शिव मम जीवन शिव कर दे।।
नूतन वर्ष हर्ष से पूरित मंगलमय कर दे।
जग के हर मानव के उर में वेद ज्ञान भर दे।।
मिटे अंधेरा होय सवेरा निर्मल मन कर दे।
घोर तमिस्रा आर्य राष्ट्र की छिन्न–भिन्न कर दो।।
भारत को भारत कर दे तू मोह निशा हर ले।
नवप्रभात से जीवन कलिका तू विकसित कर दे।।
नव उल्लास विश्व में व्यापे, तन मन सब पुलकित कर दे।
क्लैव्यभाव दुःख दैन्य मिटाकर शौर्य ओज भर दे।।
भय विह्वल हर मानव उर में निर्भयता भर दे।
संसृति का संत्रास मिटाकर लोक पूर्ण आलोकित कर दे।।
जीवन में नव ज्योति जगाकर अंधकार हर ले।
वेदमंत्र की पावन ध्वनि से शोक मुक्त कर दे।।
विकृति से हम मुक्त सदा हों संस्कृति से संयुक्त सदा हो।
ऐसा दिव्य भाव प्रलयंकर तन मन में भर दे।।
गरल पान कर मानवता का सुधा सिक्त वसुधा कर दे।
शांति, सरलता, शुचिता, मुदिता जन–जन में भर दे।।
शतपथ का सन्मार्ग दिखाकर सकल विघ्न हर ले।
संस्कृति का उत्थान करें हम तू ऐसा वर दे।।

किसान का बड़प्पन

संकलन– शैलेन्द्र कुमार सिंह

बाजीराव पेशवा मराठा सेना के प्रधान सेनापति थे। एक बार वह किसी युद्ध में विजयी होकर सेनासहित राजधानी लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने मालवा में पड़ाव डाला। पूरी सेना बुरी तरह से थकी हुई थी। क्या सैनिक और क्या राजा, सभी भूख–प्यास से बेहाल थे, किन्तु खाने के लिए अब उनके पास पर्याप्त सामाग्री नहीं थी। यह देखकर बाजीराव ने अपने एक सरदार को बुलाकर किसी खेत में फसल कटवाकर छावनी में लाने का आदेश दिया। बाजीराव के आदेश का पालन करते हुए सरदार सैनिकों की एक छोटी सी टुकड़ी लेकर पास के गांव में पहुंचा। गांव के बाहर हर उसे एक किसान दिख गया। उसने किसान को सबसे बड़े खेत पर ले जाने को कहा। किसान को लगा कि यह कोई अधिकारी है, जो खेतों का निरीक्षण करने आया है। बड़े खेत पर जाते ही सरदार ने सैनिकों को फसल काटने का आदेश दिया। यह सुनते ही किसान काटने का आदेश दिया। यह सुनते ही किसान चकरा गया। उसने हाथ जोड़कर कहा, 'महाराज! आप इस खेत की फसल न काटें। मैं आपको दूसरे खेत पर ले चलता हूँ।' सरदार और उसके सैनिक किसान के साथ चल पड़े। वह उन्हें कुछ मील दूर ले गया और वहां एक छोटे–से खेत की ओर संकेत कर कहा, 'आपको जितनी फसल चाहिए, यहां से काट लीजिए।' सरादर ने नारज होते हुए कहा, 'यह खेत तो बहुत छोटा है। फिर तुम हमें यहां इतनी दूर क्यों लाए?' तक किसान नम्रता से बोला, 'वह खेत किसी दूसरे का था। मैं अपने सामने उसका खेत कैसे कटता देखता? यह खेत मेरा है, इसलिए आपको यहां लाया।' किसान का बड़ा दिल देखकर सरदार का गुस्सा ठंडा हो गया। उसने फसल नहीं कटवाई और बाजीराव को सारी बात बताई। तब बाजीराव ने अपनी गलती सुधारते हुए किसान को उसकी फसल के बदले पर्याप्त धन दिया और फसल कटवाई। नम्रता, बड़प्पन को दर्शाती है।

पृष्ठ १ का शेष

गुरूकुल की शिक्षा से होता है संस्कारों का निर्माण

संस्मरण सुनाकर वीर रस से आर्य जनता का मार्गदशन किया संयोजन स्वामी अखिलानन्द सरस्वती ने किया १८ मार्च को प्रातः यज्ञशाल में यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई यजमानों में ऋषिदेव आर्य स्याना तथा मयंक कुमार आर्य मुरादाबाद रहे। वेदपाठ ब्र० राजेश, ब्र० आनन्द एवं आचार्य कुलदीप शास्त्री ने किया पूर्णाहुति पर सेवाराम त्यागी एवं राजकुमार प्रधान जी, गा०बाद ने आकर ऋषि डेरी स्याना ऋषि चौ० ज्ञानेन्द्र गान्धी जी ने *दैनिक यज्ञ के संकल्प* के साथ पूर्णाहुति की तत्पश्चात् समापन समारोह श्री चौ० सत्यवीर सिंह भ.कि.पू. के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ जिसमें डॉ० धीरज सिंह मुख्य अतिथि रहे तथा श्री पं० प्रकाश वीर शास्त्री के भानजे, शरद त्यागी, श्री ज्ञानेन्द्र गांधी, प्रधान राजकुमार, श्री अजब सिंह मुराबाद, रामलच्छी यादव, ऋषिपाल यादव कुशल पाल आर्य, श्यैदान सिंह आर्य, विनोद कुमार, सत्येन्द्र भगत जी, संवाराज त्यागी, प्रेमपाल शास्त्री सभी विष्शिट अतिथि के रूप में मंच पर सुशोभित रहे स्वागत समिति की ओर से स्वागताध्यक्ष श्री संजीवरामा, बुलन्दशहर ने सभी का स्वागत किया, उनका स्वागत धनुर्विद्या से किया गया।

राम रहीस आर्य, नकुल सिंह, ऋषिपाल सिंह,फकीरचन्द्र चौहान, हरवीर सिंह, उत्तम सिंह, रामेन्द्र सिंह खैय्या, वीरेन्द्र सिंह, हरवीर, एड० मुन्नू हरीश्चन्द्र आर्य अमरपाल सिंह आर्य धर्मेन्द सिंह नेकपाल आर्य, प्रमोद आचार्य, मा० रणजीत सिंह सूबेदार रिसाल सिंह, मंगत सिंह, त्रिलोक चन्द्र आर्य, दिनेश आचार्य़, राजवीर सिंह आर्य, जीत सिंह आर्य, धर्मवरी सिंह, भारत भूषण आदि–आदि ने अतिथियों का फूल मालाओं से स्वागत किया वक्ताओं ने अपने विचार दिये शौदान सिंह आर्य ने आर्य जगत, के भावविभोर कर दिया, ज्ञानेन्द्र गांधी जी ने सभी का धन्यवाद किया शरद त्यागी जी का प्रभाव शाली वक्तव्य रहा।

अध्यक्ष पद से चौ० सत्यवीर सिंह जी ने आर्य वीरों की आज विशेष जरूरत है बताया, बाद में संचालक एवं संयोजक स्वामी जी ने सभी वक्ताओं एवं श्रोताओं का विशेष आभार व्यक्त किया। आचार्य राजीव जी एवं कोषाध्यक्ष महेश आर्य उपाध्यक्ष शौदान सिंह जी एवं मन्त्री श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह के द्वारा सभी विद्वानों एवं मुख्य कर्त्ताओं का महर्षि दयानन्द जी का चित्र देकर सम्मानित किया। सभा के लिए ११ हजार के लिए प्रेरणा प्रदान की उनका नाम पत्थर पर अंकित किया जायेगा। ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन प्रभावशाली रहा, सीता आर्य के विचारों से सभी आर्य जन लाभान्वित हुए। गंगा किनारे पवित्र तीर्थ स्थली पर गुरूकुल पूठ का भव्य सम्मेलन शान्तिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ इसकी सफलता के लिए आर्य जनता का बारम्बार आभार व्यक्त करते हैं।

मैथिलीशरण गुप्त की सुन्दर रचना

तप्त हृदय को , सरस स्नेह से ,
जो सहला दे , **मित्र वही है।**

रूखे मन को , सराबोर कर,
जो नहला दे , **मित्र वही है।**

प्रिय वियोग ,संतप्त चित्त को ,
जो बहला दे , **मित्र वही है।**

अश्रु बूँद की , एक झलक से ,
जो दहला दे , **मित्र वही है।**

आर्य समाचार

1. **महर्षि दयानन्द इण्टर कालेज टनकपुर (चंपावत) में नवसंवत्सर का पर्व बड़े धूम–धाम से मनाया गया** जिसमें स्थानीय लोगों ने भाग लिया। तथा विद्यालय के बच्चों ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य रामदेव जी, आर्य मुनी ने नवसंवत्सर २०७५ की सभी को शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर रघुराज शास्त्री, डा० विश्वमित्र शास्त्री, डा० मुकेश कुमार व प्रधानाचार्य मोनिका आर्य, अध्यक्ष धर्मपाल आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत के तत्वावधान में आर्य तिगड़ा में 5 दिवसीय पुरोहित शिविर का आयोजन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बागपत के आर्य समाज संयुक्त तत्वावधान में ५ दिवसीय पुरोहित शिविर का आयोजन किया जा रहा है, दिनांक २८.३.२०१८ से १.४.२०१८ तक यह शिविर रहेगा, इच्छुक प्रशिक्षार्थि सम्पर्क करें। आर्यसामज तिगड़ा से सम्पर्क करें।

शिविर अध्यक्ष	संयोजक	प्रशिक्षक
डा0 भोपाल सिंह आर्य	**आचार्य करण सिंह**	**भगवानदास आर्य, धनकुमार शास्त्री श्री हरिसिंह आर्य**

आर्य समाज वीर सवरकर नगर, जयपुर हाउस में 38वां वार्षिकोत्सव नव संवत्सर पर्व मनाया गया।

आर्य समाज वीर सवरकर नगर, जयपुर हाउस में ३८वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें प्रदेश के प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया। मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य स्वदेश जी (मथुरा) आचार्य सत्यानन्द जी, आचार्य दर्शनानन्द (पानीपत,) भजनोपदेशक रघुनाथ जी, इस अवसर पर अनेक महानुभाव उपस्थित रहे वेद प्रकाश जी शर्मा, प्रदीप डेम्बला जी, अश्वनी डेम्बला जी, वरूणा आर्य, पुष्पा सक्सेना, रितू आर्या, मालती अरोरा। आदि महानुभाव उपस्थित ने भाग लिया।

आर्य समाज तिलहर में नव संवत्सर 2018 बड़ी धूमधाम से मनाया गया

आर्य समाज तिलहर शाहजहांपुर में नवसंवतसर २०१८ बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य चन्दन जी ने नवसंवतसर के विषय में बताया। आर्य समाज के अध्यक्ष श्री लोकेश आर्य ने सभी को नव संवत्सर की शुभकामनाएं दी।

आर्य समाज काकरिया में स्थापना दिवस समारोह मनाया गया

आर्य समाज काकरिया अहमदाबाद मे चैत्र प्रतिपदा २०१७५ सवंतसर दिनांक १८ मार्च को १४४वें स्थापना दिवस समारोह का कार्यक्रम भव्यता के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर अनेक महानुभाव उपस्थित रहे। वैदिक धर्म प्रचारक श्री कमलेश अग्निहोत्री का व उत्तर प्रदेश से पधारे हुए भजनोपदेशक शिवपाल आर्य जी का अति सुन्दर प्रवचन हुआ।

आर्य समाज प्रतापगढ़ में स्थापना दिवस पर शोभा यात्रा निकाली गयी

आर्य समाज प्रतापगढ़ में दिनांक १८ मार्च नवसंवतसर २०७५ पर श्री सतीश चौरसिया, श्री सत्य प्रकाश श्रीवास्तव जी की अध्यक्षता में शोभायात्रा निकाली गयी। नगर के अनेक लोगों ने भाग लिया। छोटे बच्चों ने भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। रेखा आर्या उषा आर्या, आदि बच्चों ने आर्य समाज के भजनों से सबको प्रभावित किया। श्रीमती संध्या आर्या भजनोपदेशिका एवं पं० हरीश कुमार शास्त्री जी के भजनों ने आर्यजनों मार्ग दर्शन किया। इस अवसर पर श्री राम कृपाल कशोधन, श्री हरिकान्त आर्य, श्री रवि आर्य, श्री शशीभूषण आर्य, श्रीमती रेखा आर्य, उषा आर्य, अनारा चौरसिया, सूरज चौरसिया, एवं सत्यप्रकाश श्रीवास्तव जी (भू–सम्मपत्ति अधिकारी) आर्य प्रतिनिध उ०प्र० आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

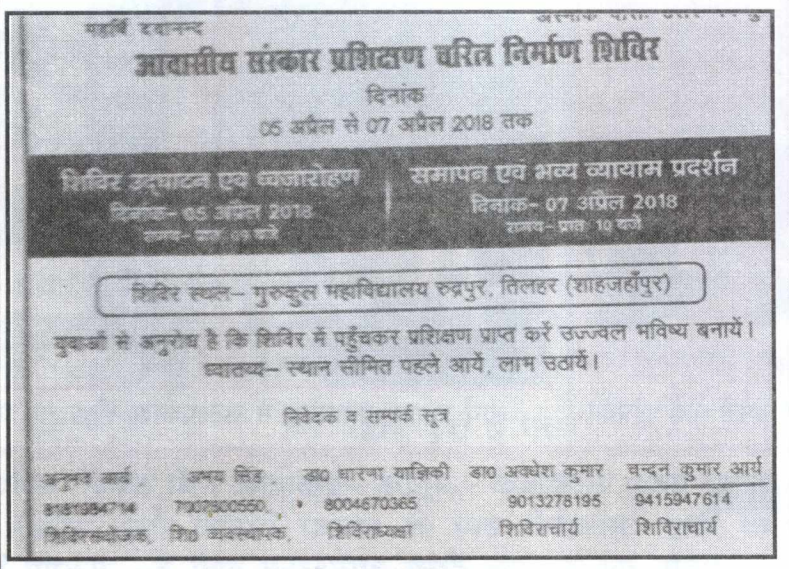

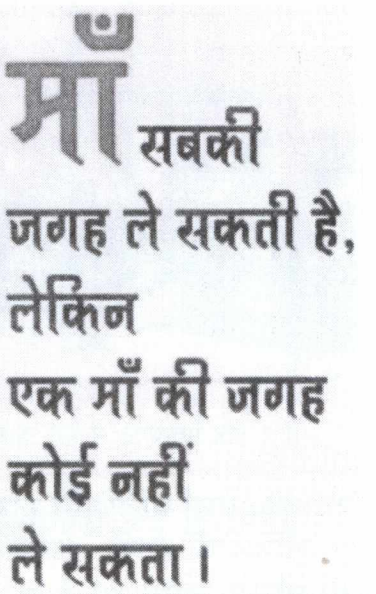

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

गुरूकुल पुष्पावती पूठ व विभिन्न आर्य समाजों द्वारा नव संवत्सर २०७५ के कार्यक्रम की झलकियां

गुरूकुल पुष्पावती पूठ के द्वारा नवसंवत्सर २०७५ आर्य समाज स्थापना दिवस के कार्यक्रम की झलकियां

गुरूकुल पुष्पावती पूठ में नव संवत्सर २०७५ आर्यसमाज स्थापना दिवस पर चीन से आये हुए अतिथियों का स्वागत करते हुए अशोक कुमार जी आर्य

आर्य समाज मुरादाबाद मंण्डल द्वारा नव संवत्सर २०७५ पर निकाली गयी शोभायात्रा की कुछ झलकियां

आर्य समाज मुरादाबाद मुरादाबाद मंण्डल

आर्य समाज महोलिया बागरमऊ में नवसंवत्सर पर यज्ञ करते हुए आर्य जन

आर्य समाज तिलहर शाहजहांपुर में नवसंवत्सर पर यज्ञ करते हुए आर्य जन

आर्य समाज प्रतापगढ़ में मंच कार्यक्रम करते नन्हें आर्यवीर

आर्य समाज प्रतापगढ़ में सत्यप्रकाश श्रीवास्तव जी एवं सतीश चौरसिया जी की अध्यक्षता में शोभायात्रा की झलक

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।